REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

"आलमगीर" वरदान के अभिशाप"

(ले. भीष्म साहनी, सम्पूर्ण नाटक, भाग-१, राजकमल प्रकाशन-नवी दिल्ली, प्र.आ. २०११)

Dr. Hitesh Gandhi
M.Phil., Ph.D. , Supervising Teacher for Ph.D. and Associate Professor Ratansinhji Mahida College, Rajpipla, Gujarat.

प्रस्तावना :

विभाजन विषयक साहित्त्य अने खासकरीने "तमस" नवलकथा अने विशेषे धारावाहिकथी वधु जाणीता भीष्म साहनीओ भाग्यरेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटीरयां, वाङ्चु, शोभायात्रा, निशाचर, पाली, डायन जेवा वार्ता संग्रहो आप्या छे,झरोखे, कडियां, तमस, वसंती, मयादास की माडी, कूंतो, नीलू नीलिमा नीलोफर जेवी नवलकथाओ उपरांत हानूश, कबिराखडा बजारमें, माधवी, मुआवजे, रंग दे बसंती चोला अने आलमगीर जेवा नाटको आप्या छे."आलमगीर'ह भीष्म साहनीनुं औरंगझेबना आलम (सत्ता) अने आलमगीर (तलवार) ने पामवानी मथामण अने तेने पाम्या बाद उभी थती औरंगझेबनी रुग्ण मनोस्थितिने निरुपतुं छेल्लुं नाटक छे.

औरंगझेबनी इतिहासमां नोंधायेली आटली विगतोथी भावक परिचित छे के आलमगीर तरीके ओळखाता औरंगझेबे प० थी वधु वर्ष भारत पर राजय करनार छठो मुगल शासक हतो.औरंगझेबनां शासनमां मुगल साम्राजय पोताना विस्तारना चरमोत्कर्ष पर पहोंचाडयुं हतुं. शरीयत या इस्लामी कानून पर आधारित पूरा साम्राजय पर "फतवा अे आलमगीरी" लागु कर्यु हतुं. थोडो समय गैर मुस्लिमो पर अतिरिकत वेरा पण लगाव्यो हतो. गैर मुस्लिम जनता पर शरियत लागु करवावाळो प्रथम मुस्लिम शासक हतो तो अने विधर्मी धार्मिक स्थळोने नष्ट करी गुरु तेग बहादूरनी हत्त्या करनरो हतो.मुगल प्रथा अनुसार शाहजहाअे १६३४ मां औरंगझेबने हककनो सुबेदार नियुकत कर्यो हतो. आ तरफ मुगल दरबारनुं कामकाज पोतान दिकरा द्वारा शिकोहने सोंपवा लाग्या. १६४४ मां बहेनना मृत्युना कारणे आगरा आवेला औरंगझेब पर शाहजहांने क्रोध थाय छे. तेथी तेने दककनना सुबेदारना होदा परथी दूर कराय छे. आम औरंगझेब ७ महिना सुधी दरबार न आवी शकता नथी. त्यार बाद शाहजहां तेमने गुजरातना सुबेदार बनावे छे. औरंगझेब सारी रीते शासन करता अेने बदख्शान (उत्तरी अफगानिस्तान) अने बाल्ख (अफगान-उझबेक) क्षेत्रना सुबेदार नियुकत करवामां आवे छे. कंधार पर नियंत्रण माटे लडता रहया पण तेने हार मळी.आ साथे तेने पोताना पितानी उपेक्षा मळी. १६पर मां दककनना सुबेदार फरी बनाववामां आव्या. गोलकंडा अने बीजापुर सामेनी लडाइमां निर्णायक क्षणमां शाहजहां अे अेने पाछी बोलावी लीधी हती.आनाथी ठेस पहोंची कारण के आ बधु डाराना कहेवाथी करवामां आवेल. १६पह मां औरंगझेबे शाहजहांने केद करी पछी पोतानो राजयाभिषेक करावी लीधो.

आ इतिहास कथित हकीकतने भीष्म साहनी "आमलगीर" रुपे नाटकनुं स्वरुप आपवा कळाकीय यत्न कर्यो छे. आमलगीर अेटले विश्व विजेता.दिल्हीनी गादीअे बेसनारने विश्व विजेता मानी लेवातुं हशे. आ विश्वविजेता बनवा "आमलगीर'ह औरंगझेब रणनीति मुत्सदीपणुं अने छळकपट अपनावे छे ते औरंगझेबना चरित्रना विविध परिमाण द्वारा आलेखन

कर्यु छे. सळंग दश दृश्य अने शाहजहां, शाइस्ताखान, कहानारा, दारा, जहानारा, रोशननारा, जसवंतसिंह, अलीबेग अने कबीर पंथी बाबालाल जेवा २६ पात्रो जेटली विशाळ पात्र सृष्टि धरावतुं नाटक छे.

प्रथम दृश्यमां शाहजहां द्वारा दारानुं प्रत्येनो लगाव, दाराना अने औरंगझेबना चरित्रनी लाक्षणिकता आकारित करी छे. दृश्यनी शरुआतमां शाहजहां मुमताजना भाइ शाइस्ताखानने दाराअे कंधार पर आक्रमण करीपोतानी बहादूरी साबित करी आपी हती.जोके आ आक्रमण सफळ रहयुं न हतुं.परंतु दारानी हिंमतथी खुश थइ शाहजहां तेनुं सन्नमान करवा मांगे छे अने पचीस हजारनी मनसबदारी आपवानुं अेलान करे छे साइस्ताखान कहे छे तेम अेक समये औरंगझेबे पण कंधार पर आक्रमण करी पोतानी जवामर्दी साबित करी हती.आ आक्रमण वखते आकाशमां तीर छूटता हता त्यारे पण औरंगझेब घूंटणीये बेसीने नमाझ पढतो हतो. आम ते पोताना इमाननो पाकको छे, पंचमनमाजी छे. परंतु ते अेक ज विचारसरणी पर चालवावाळो होवाथी, अेनामां दारा जेवी फराखदिली अेटले के उदारता नथी जयारे डारा बीजानी जजबातनी इमाननी कदर करे छे.

शाहजहां अे पोताना मृत्यु पछी सत्ता माटे छीनाझपटी ना थाय तेथी चारेय संतानोने जुदा जुदा मोरचा सोंपी दीधा हता. औरंगझेबने सौथी मुश्केल दक्षिणनी मुहीम पर मोकल्यो छे, सुजा समजदार छे पण अैयाश तबियतनो छे, तेने बंगाळ मोकल्यो छे. सौथी नाना अने कोइना ने कोइना सहारे चालता कमजोर मुरादबक्षने गुजरातनी हुकुमत संभाळवा मोकली आप्यो छे बन्नेना प्रस्थान पछी जहानारा अने दारा वातचीत करी रहया छे. शाहजहाअे दिल्हीनां बनावेल "शाह जहाना" बाद नेदाराअे आनंद उल्लासनुं मोटुं केन्द्र बनावी दीधुं छे. सुफी अब्दुरसमद दिल्ही आवी गया छे तेओ जयारे दिल्ही आव्या त्यारे आखु वातावरण गुंजी रहयुं हतुं. आखी रात कव्वालीओ गवाइ हती अनेक दरवेश दिल्ली आवी रहया छे दिल्ही सुफी शिक्षणनुं केन्द्र बनी चूकयुं छे. आ दिल्हीमां तेने लखवानुं साहित्त्य सर्जननुं स्थान पण राख्युं छे. अहीं सात सात विद्वान काम करवा लाग्या छे. त्रण पुस्तक तैयार कर्या छे हालमां ज तैयार करेलुं "मजमा-उल-बहराइन"- (बे सागरोनुं मिलन) अेमां हिन्दु अने इस्लाममां जे समान तत्त्व जोवा मळे छे. अेना पर प्रकाश पाडवामां आव्यो छे. आ विशे ते कायमी आववा वाळा कबीरपंथी बाबालाल अने जहांनाराने वात करे छे अहीं दाराना व्यकितत्त्वना केटलाक परिमाण जोवा मळे छे. शाहजहां कहे छे तेम तेनामां फराखदिली छे तो साथे साथे आम समानधर्मनी भावना पण धरावे छे अने साहित्त्यसर्जन साथे पण संकळायेलो छे.

बाबालाल दाराने मळीने जतो होय छे त्यारे हुकमनामाना कारणे दिल्ही आवेला औरंगझेबने बाबालालनुं महेलमां आववुं अने दिल्हीनो माहोल गमतो नथी. तेने लागे छे दिल्ही अैयासीो अडडो अने भांडोनुं शहेर बनवा जइ रहयुं छे. आखी रात डफलीओ वागे छे, घुंघरु अने शराबी रइसोना खीलखीलाट संभळाय छे आम तेने मुगलीया सल्तनत पतनना मार्गे जती लागे छे औरंगझेबनो आदर्श बाबत छे, जे लश्कर लइने हिन्दुस्तान आव्या हता.शाहजहां बधानी हजरीमां चालीस हजारी मनसबदारनो होदो आपे छे तेथीतेना नीचे पचीस हजार बे घोडा सवार हशे. आथी दारा आजथी "शाह बलंद इकबाल" ओळखाशे. आम अहीं औरंगझेबनी अवगणना थाय छे तेने पण कन्धार पर बे-बे वार आक्रमण कर्यु हतुं परंतु दारा शाहजहांनी वधु नजीक होवाथी आ शिरपाव आपवामां आव्यो होवानुं तेन लागे छे आम सर्जके प्रथम दृश्यमां ज बंने वच्चेनो विरोध उभो कर्यो छे. परस्पर जुदी प्रकृतिना बन्ने पात्रो छे. औरंगझेबना मनमां संघर्षना बीज मुकी नाटकनी संरचनानो प्रारंभ करीवस्तु स्फोट (अेकसपोझीशन) करे छे.

बीजा दृश्यमां शाहजहा द्वारा थयेला अपमाननो बदलो लेवा अने दिल्हीनो तखे सर करवानी रणनीतिनी पहेली चाल चाले छे. सत्तानी लालचमां दारा द्वारा बादशाहने झेर आपवामां आवयानुं जणावी, कमजोर मुरादबक्षने बोलावीने बराबर उश्केरी मोतीनो हार अने अेक लाख रुपिया आपी आगरा पर चढाइ करवानुं नककी करे छे. औरंगझेब माने छे के शाहजहां अे पोतानी शानशोकत बतावा दिल्हीमां शाहजहाना बाद बनाव्युं, कन्धारना बे वर्षना आक्रमणमां लाखो रुपिया बरबाद कर्या.आपी मुदारबक्षने दिल्हीनो तख्त सोंपवानी तेनी इच्छा छे."सच पुछो तो मेरी दिली ख्वाइश है की अेक दिन तुम तख्त पर बैठो" (पान नं.५४५)

आम मुदारबक्षने बोलावी दिल्हीनो सत्ता आपवानी लालच आपे छे अहीं औरंगझेबना कूच करवानो इरादो अने मुत्त्सदीपणुं जोवा मळे छे.

दृश्य-३ मां शाहजहाने खबर मळी गया छे के औरंगझेब अने मुरादनी फौज आगरा तरफ आगळ वधी रही छे. आगरा जता रस्तामां शाहजहाअे बक्षेला जसवंतसिंहनुं राजय हतुं. जशवंतसिंहने तो औरंगझेबे पिता शाहजहानी सारवार करवा जाउ छुं तेवो पत्र अगाउथी लख्यो हतो, परंतु औरंगझेब साथे आवेला लश्कर जोइने जसवंतसिंह लडे छे तो खरा परंतु तेनी अने कासिमखाननी फौज औरंगझेबना लश्करने रोकी शकी नहीं. आ सांभळीने शाहजहां हतप्रत थइ क्षुब्ध थइ जाय छे. तेमना संतानोअे तलवारो खेंची लीधी छे नुं जाणी तेमनुं हृदय विंधाइ जाय छे, तेओ झरोखा दर्शन माटे पण जइ शकया नथी, दाराने आ बधुं औरंगझेबनुं कर्युं कराव्यु लागे छे तेने फरेबीथी तलवार उचकी छे तेथी तेने जल्दी शाहजहानां पगमां लावी देवानो हुंकार करे छे बीजी तरफ बंगाळना सुबेदार बनेला सुझाअे आझादी अेलान करी दीधी छे अने पोतानी तापोशी पण करावी ले छे तेमने जोइने औरंगझेबनी फौज तेमना पर हुमला नही करे तेवुं मानता शाहजहा पोते जंगमां उतरवा मांगे छे. तेमनुं अेक ज ध्येय छे के गमे ते रीते आ गृहयुद्ध रोकवुं छे."मेरे बेटे नंगी तलवारे लिये मेरी तरफ बढते आर हे है.उनके वार में अपनी छाती पर झेलूंगा.मैं खुद जंग के मैदान में उतरुंगा.." (पान-५४६) शाइस्ताखान शाहजहाने समजावे छे के लोको औरंगझेबने अेक साच्चो पंचनमाजी मुसलमान माने छे तेथी अंदरोअंदर तेनीहिमायत पण करेछे, औरंगझेब तेनो फायदो उठावे तेम पण छे. जयारे दाराने भरोसो छे के दिल्लीना लोको तेनी ताकात छे. अे खोटुं छे के औरंगझेबने साचो मुसलमान मानी लोको तेनी साथे धोको करशे.

दृश्य-४ दारानी हवेलीमां भजवाय छे. फौजमां खळभळाट मची गयो होवाथी दारा युद्धना मेदानमांथी भागीने तेनी पत्नी नादिरा पासे हवेलीमां आवी गयो छे. खलीलुल्लाहे अे अनुरोध करीने कहयुं हतुं के जमणी बाजुना मोरचानो अेक हिस्सो नबळो पडी गयो होवाथी ते तरफ जाय छे तेने होदा पर ना बेठेला जोइ फौजी गभराइने भागवा मांडया हता. दारानो पुत्र सिपहने आ दारानी मुर्खामी लागे छे. तेना जाते उतरीने जवा करता खल्लीउलल्लाने मोकलवानो हतो आ मूर्खामीना कारणे ज तेओ जीतेली बाजी हारी गया हता. बीजी रफ औरंगझेबनां सिपाही दारानो पीछो करता होवाथी तेने त्यांथी भागी जवुं पडे तेम छे. तेओ बादशाह सलामत पासे महेलमां रही शकता नथी तेथी तेओ दिल्ही जवानुं नकको करे छे.

औरंगझेबनी कुटनीति अने क्रूर नीति फरी अेकवार दृश्य-प मां आलेखाइ छे. हवे तेमने हिन्दुस्तानना तख्त सुधी पहोंचवानो रस्तो साफ लागी रहयो छे. जंगना मेदानमां थयेली जीत माटे औरंगझेब मुरादबक्षनी प्रशंसा करे छे. जहानारा आवी औरंगझेबने शाहजहांअे आपेली परंपरागत "आमलगीर" तलवार सोंपे छे. औरंगझेब तलवार लइ भावूकताथी साची दिलथी बादशाहनो आभार माने छे त्यांज गेबी अवाज संभळाय छे तेने चेतवे छे के आ चाल पण होइ शके कारणे दारा अने जहानारा दो जीस्म अेक जान छे. दारा फरी फौज भेगी करी हुमलो करी शके तेम छे. आम आलमगीर तलवार आवता ज औरंगझेबना चरित्रमां अेक नवुं परिमाण उमेराय छे हवे ते शंकाशील बनतो जाय छे. आथी ते दारानो पीछो करवा खलीलुल्लाहने अेक कुमुक-टुकडी साथे मोकली आपे छे. राजा जशवंतसिंह मळवा आवी माफी मांगे छे त्यारे औरंगझेब तेने माफी आपी दारानी पाछळ गयेला खलीलुल्लाह जोडे मोकली आपे छे अलीबेगने आ गमतुं नथी. तेथी ते कहे छे. शाहजहा आपतो अपने दुश्मनो का खैर कदम करने लगे आपको तो इसे शिरफत कर लनो चाहिअे था. जेना पर भरोसो मुकवानी ना पाडे छे "इसका कया भरोसा शाहजहा ?" त्यारे औरंगझेब मार्मिक हसीने कही दे छे : "ओर (मुस्कुराकर) हमाराभी कया भरोसा, अली बेग." (पान-प६३) खलीलुल्लाह अने जशवंतसिंह पर नजर राखवा अेक सरदारने पण मोकली आपवानुं जणावे छे बीजी तरफ शाहजहाने दुश्मनोना संकजामांथी बहार काढवानुं जणावी दिकरा महम्मद आजमने बादशाहन बधी सुख सगवड आपी नजरबंध करी लेवानुं जणावे छे.

विजयनी खुशाली मनावी नशामां चकचूर मुरादबक्ष, चांदीना होदा पर बेसी औरंगझेब अने पोते करेली हाथी सवारी अने तेओ सिंहासन पर पण साथे साथे बेठा हता तेवा दीवा स्वप्ननी वात अलीबेगने करे छे त्यारे

अेक बाजु उभा रही सांभळी रहेलो औरंगझेब बेपरवाह थयेला मुरादबक्षने पिचककड, मनहूस, बेगैरम गणावी तेने पकडी गीरफतार करी लेवा आदेश करे छे. मुरादबक्षनी माशुका-सरसनबाइने पण तेनी साथे मोकली आपी मुरादबक्षनो बधो खजानो जप्त करावी ले छे. अहीं सांप्रत राजकारण प्रमाणे उदेश सधाय जाय पछी साधनने नेस्तानाबुद करवानी रीति अहीं जोइ शकाय छे.

छठा दृश्यमां मलिक जीवनना त्यां दारा अने नदिरा जाय छे अने दारा पोतानो बळापो काढे छे के शाहजहा तेने पोतानो वारस जाहेर करी युवराज घोषित न करत तो औरंगझेबनां हृदयमां वेरनी आग भडकी ना उठत. पत्नी नादिका औरंगझेबनां रवैयाने काळा नागनी जेम ओळखाव छे जे कुंकारतो कुंकारता आजुबाजुना बधाने डसी रहयो छे. औरंगझेब का रवैया इस वकत काले नाग जैसा हो रहा है - जो कुंकारता हुआ दाअे - बाये सभी कों डंस रहा है. (पान-प७१) मलिक जीवन खबर आपे छे के राजा जयसिंह अने बहादुरखान फौज साथे दारानो पीछो करी रहया छे, तेथी तेमनुं अहीं रहेवुं सलाहमत नथी लागतुं. बे दिवस पछी तेमने आवीने मळवानुं जणावी त्यांथी नीकळी जाय छे अने वेरान जग्याअे आवी जायछे जयां जीवतोडी दे छे. सिपहने नादिरानी ताबूत अर्थी लइ लाहोर मोकले छे. मालिक जीवनना ज कहेवाथी मालिक जीवननो भाइ आवीने दाराने गिरफतार करी ले छे अने बेडीयो पहेरावी दे छे दारानो बधो सामान लूंटी लेवामां आवे छे.

सातमुं दृश्य आखुं पत्र स्वरुपे छे नजरबंध रखायेला शाहजहा औरंगझेबनो पत्र वांचे छे. नाटयकार नेपथ्थमांथी माइक्रोफान द्वारा पत्रनुं वांचन करवानी प्रयुीकतनो विनियोग करे छे पत्रमां औरंगझेब पोताना पक्ष रजु करे छे. पोताने शाहजहानी नजरमां खरो उतारवा इश्वरने हंमेशा प्रार्थना करतो हतो ते शाहजहा पर आरोप पण मुके छे के तेमना कहेवाथी ज तेना भाइओअे तेना विरुद्ध तलवार उठावी हती. शाहजहां तेने महोबत नहोता करता अने हुकूमत पोताना हाथमां बनावी राखवा मांगता हता जे तेमना हाथमांथी निकळी चूकी छे आथी शरीयत मुजब हुकम चलाववा मुश्केलीओ पडती हती. जे हकुमत चलाववानी काबेलीयत राखतु होय, इश्वर पण तेने मदद करे छे. कमजोर हृदयना हिफाजत करी शकता नथी. आटलुं जणावी दारा शुकोह अने शाहजहाना जवेरात मंगावी ले छे कारण के हुकुमतमांथी नीकळी गया पछी अेने पहेरवुं शोधा आपतुं नथी परंतु अटपटुं लागे छे.

पत्र वांच्या पछी शाहजहाना हाथमांथी पत्र पडी जाय छे अने धीरे चालता चालता गादी पर आवीने बेसे छे. त्यारे स्टेज पर बे आकृति प्रकट थाय छे पहेला पगमां बेडीयो हाथोमां हाथकडी पहेरेलो दारा ज थोडीक क्षणो बाद ओझल थइ जाय छे. पछी तरफ औरंगझेबनी आकृति प्रकट थाय छे माटे जगमगतो ताज अने कमरमां आलमगीर तलवार छे थोडी क्षणो बाद औरंगझेबनी आकृति पण ओझल थइ जाय छे. अहीं नाटयकारनी नाटयसुझ नाटय प्रयुकित टेकनीकनो विनियोग थयेलो जोवा मळे छे."पत्र" नी प्रयुकित अने पछी आकृति देखाय अे विझयुअल्स नाटकने अेक आयाम आपे छे.

आठमां दृश्यमां बंदी बनेला दाराने दिल्हीमां फेरववामां आवे छे. जयारे दाराने दिल्हीना रसता पर फेरववामां आवे छे त्यारे लोको रडी रहया छे. दारा जयां प्रकाशन कार्य करावतो हतो ते मकबरा सामेथी सवार पसार थाय छे त्यारे तेने ताकीताकीने जोइ रहयो छे दाराने जोवा भीडनो जुवाळ उमटी पडयो छे जहानारा औरंगझेब पासे जइ दाराने कंदार जतो रहेवानी रहेमनी भीख मांगी रही छे. औरंगझेब चूपचाप उभो रहे छे त्यारे जहानारा "ते चैनथी दिल्हीना तख्त पर नहीं बेसी शके" जेवो शाप आपी त्यांथी जती रहे छे. केटलाक लोको माल्कि जीवन पर पत्थर मारो करे छे शहेरमां गमे त्यारे बळवो थइ शके तेम छे सूफियो अेन दरवेशो औरंगझेबनी विरुद्ध भडकावी रहया होवानुं रोशननारा द्वारा जाणवा मळे छे. औरंगझेब लोकोनो मिजाज पारखी सवारी आग्रा तरफ वाळी देवा आदेश आपे छे.

हवे दाराने मजहबी-धर्मनी अदालतमां ढसडी लावी तेना ज हथियार वडे तेने महात करवानो पेंतरो रची औरंगझेब नवी चाल विचारे छे. तेने हिन्दु अने मुसलमान धर्मना समान तत्त्वो पर प्रकाश पाडता पुस्तक मजबा उल बहेरीननां हिन्दु धर्मनी तरफेण करी छे अे आरोप सर तेने दोषित ठेरववानुं नककी करे छे. सांप्रत समयनी राजनीतिमां धर्मनो, धर्मगुरुओना पोताने वांच्छित परिणाम माटे कराता उपयोगनुं सुज्ञ भावकने स्मरण थाय तेवुं

सहज जणाय आवे तेवुं छे ते खोटुं नथी. मजहबी अदालत दाराने दोषित ठेरवे छे. औरंगझेब अदालतना न्याय मुजब दारानो शिरच्छेद करावी छे.

औरंगझेब शहेंशाह बनता दिल्ही धीरे धीरे खाली थवा लागे छे ते नवमां दृश्यमां निरुप्युं छे. बाबालाल भागीने जंगलमां जता रहे छे आलमगीर शहेंनशाह बन्या पछी पोतानी सत्ता टकावी राखवा दबाणमां मानसिक स्वस्थता गुमावे छे ते दरेक पर शंका करे छे औरंगझेब कया समये शुं निर्णय करे ते जोइ जाणी शके तेम नथी. अेक अमलदार पर बीजा अमलदारने नजर राखवा जासूसी करवा मूकी आपे छे बंने पर नजर राखवा त्रीजो माणस मोकले. आम आंशिक विक्षप्तिनी स्थिति तरफ धकेलातो "उ(थ'झः" बनी रहेछे मुदारबक्षने पोतेज मरावी नांख्यो होवा छतां मुरादबक्ष भागी नीकळे छे. तो तेना मोटा दिकरा मुहम्मदने ग्वालिरमां नजरबद्ध करीदीधो जयां तेखुदखुशी करी ले छे तेनी दिकरी बेटी जे बुन्निसाअे जेलखाना पडी पडी जान तोडी नाखे छे.

नाटकना दशमां अने अंतिम दृश्यमां वयोवृद्ध दुबळो पडी गयेलो पीठ झुकावेलो औरंगझेब खुरशी पर बेठो छे. अेकलो छे दरवाजा पासे तेने सुजा जणाय छे. ते अेनी सामे बगावत करवानो होय तेवो तेने संदेह थइ रहयो छे. हकीकतमां तो सुजा घणा दिवस पहेला मरी गयो हतो. छेवटे ते अेकलो पडी गयेलो फोबीआ थी पीडातो जणाय छे."में बहुत अकेला पडता जा रहा हुं, शेख साहब... बहुत से नाते-रिश्तेदार दाग दे गये." (पान-) बाप, भाइ, बहेन, ाभभी बधानो भोग लइने आलमगीर बनेलो औरंगझेब अेकलो पडी विक्षप्तिनी आरे पहोंची गयो छे त्यारे ते वीजापुर अने गोलकुंडा हुमलो करवानुं विचारी लडता मरवानी इच्छा धरावे छे अने पोते मरी जाय तो खुल्ला आकाश नीचे कबर बनाववानुं जणावी दे छे. आम औरंगझेब नाटकनो सांप्रत राजनीतिना संदर्भे तेमज मनोवैज्ञानिक संदर्भे अभ्यास रसप्रद बनी रहे तेम छे.

औरंगझेब, दारा, मुरादबक्ष जोव पात्रो नाटकमां रसप्रद बनी रहे छे. औरंगझेब पुख्ता विचारोवाळो, दिलैर नौ जवान छे. तेनामां मजबुताइ छे, ते ऊभो रही जाय तो चटटाननी जेम देखाय छे. पोताना इमाननो पाकको, पंचनमाजी छे ते अेक ज लीटी पर चालवा वाळो माणस छे. अेमां दारा जेवी उदारता नथी. डाराने चालीस हजारी मनसबदारनो होददो मळे छे त्यारे तेनो अहंम घवाय छे अने बदलो लेवा दिल्हीनो तख्तो हांसल करवा चाल चालेछे. ते मुरादबक्षने ललचावे छे. अेक लाख रुपिया आपी तेनी साथे आग्रा उपर चढाइ पण करे छे. आम ते मुत्सदी पण छे. सत्ता मळता मुरादबक्षने पण बंदी बनावी दे छे. साधन साध्यनो विवेक न जाळवनार, तकनो बखूबी उपयोग करनार पण छे "आलमगीर" बनता कोइना पर भरोसो करतो नथी. शंकाशील बनी जाय छे. अेकबीजानी जासूसी करावे छे अने छेवटे विक्षिप्ति समीपे पहोंची जाय छे. दीकरा दीकरीओने नजरबंध करी मोतना घाट उतारता पण खचकातो नथी. चिनु मोदीनो औरंगझेब खलीफानो वेश धारण करे छे. अहीं आलम-सत्ता केन्द्रस्थ होवाथी असलामती अनुभवे छे अने शंकाशील स्वभाव वधु जोवा मळे छे.

दारा नाजुक मिजाजनो छे. दारामां उदारता छे, बीजानी जजबातोनी कदर करे छ. बीजाना इमाननी कदर करे छे ते खूब उमदा प्रकारनो इन्सान छे. सर्वधर्म सदभावमां माननारो छे. ते पुस्तक प्रकाशन केन्द्र पण स्थापे छे तो दिल्हीमां दरवेश अने कविओने मुकत अवकाश आपनार छे. तेने चालीश हजारी मनसबदारनो होददो मळे छे परंतु आ ज तेने इर्षानुं कारण बनावे छे. युद्धना मेदानमांथी बीजा पर भरोसो करे छे अने त्यांथी भागी छूटे छे. औरंगझेब तेने केदी बनावी दिल्हीमां फेरवे छे त्यारे लोकजुवाळ उमटी पडे छे ते तेनी लोकप्रियतानुं द्योतक छे आम औरंगझेबना प्रतिपक्ष तरीके उभरी आवे छे. जयारे मुरादबक्ष सौथी नानो, कमजोर, कोइना सहारे चालनारो अने सत्ता वांछु छे. आथी औरंगझेब तेनो उपयोग करी ले छे.

नाटकनी भाषा जोइअे तो ऊर्दू प्रचुर भाषा छे. केटलाक संवादना उदाहरण जोइअे तो :

१. कभी कभी जिन्दगी में अैस लम्हे आते है, शाइस्ताखान, जब लगता है, हर शै अपनी जगह पर है.जिन्दगी में अेक तवाजुन आ गया है अैसा महसूस होता हे × (पान-५२६)

२. दा जानू होकर नमाज पढने लगा है. (पान-५२६)

दो जानू - घूंटणीअे बेसीने

३. उसमे वह फराखदिली नहीं है जो दारा में है.

फराखदिली - उदारता

(१) रकतबा -- सर्जन काइ करवानु स्थान (२) आलिम - फाजिल - विद्वान

(३) इशाअत - प्रकाशन (४) नजूमी जयोतिष

(५) मर्कज - केन्द्र (६) कहकरे - हास्य

(७) अस्था - छोडो (८) खुदमुख्तारी - आझादी

(९) महाज - खेशो (१०) मिजाजपुर्सी - सेवा

(११) बेखतर - निडर (१२) तवब्बोह - कृपाद्रष्टि

(१३) हसद - इर्षा (१४) बियाबानो - वेरान जंगलमां

आ अने आ जेवा अनेक ऊर्दूभाषाना शब्दो वाचिकम माटे जेटला उपकारक निवडे छे अेटला ज प्रत्यायन माटे दुष्कर बनी रही शके तेम छे. ऊर्दू भाषाना अर्थ कोशनी सहाय लेवी पडे ते हदे भावकनी कसोटी करे तेम छे. आ शब्दोनो अर्थ स्पष्ट न थाय तो अर्थग्रहणमां क्षति ऊभी थाय तेम लागी शके. ऊडीने आंखे वागे तेवी बाबत अे छे के भाषानां विनियोगमां पात्रनुसारी भाष भेद जाणातो नथी. शाहजहां बोले छे अेज स्तरनी भाषा दारा छे अे ज स्तरनी मालिक जीवन बोले छे अेज स्तरनी भाषा बाबालाल पण बोले छे.

लेखक भीष्म साहनी नाटक लखवाना होय त्यारे जे ते वस्तुनुं संशोधन करतां होय छे. कल्पना साहनी भूमिकामां जणावे छे तेम : "भीष्मजी हर नाटक के लीअे बहुत रिसर्च करते थे. जिस विषय पर नाटक लिखना होता था, उससे सम्बन्धित किताबे घर में आ जाती थी." कयारेक अेवुं बने के कयांकथी लखवानुं शरु करे अने लखता लखता कयांक पहोंची जाय."भीष्मजी के आखरी नाटक "आलमगीर" के साथ अैसा ही कुछ हुआ था, उसकी शरुआत दार्शिनिक शहजादे दारा शिकोह से हुइ थी, पर लिखने के दौरान विषय पर जो रिसर्च हुइ, उसके बाद कहानी के केन्द्र में दारा शिकोह का भाइ मुगल बादशाह औरंगझेब आ गया." आथी ज नाटकमां दारा अने औरंगझेब वच्चे पैधान गौणनो विवेक विशेष जळवातो नथी.

लेखनां अंते औरंगझेबनो मर्मस्पर्शी संवाद पंनः स्मरित करी शकाय : "मुजे हाकीम बनने की कोइ हवस नहीं है, जहांनारा, ना ही शान-ओ शौकत की. लेकिन अगर मुझे हकुमत करनी है तो पूरी मजबूती सें करुंगा. हाकिम अेक घुड सवार की मानिन्द होता है. लगाम खीचकर रखेगा तो घोडा सबके काबू में रहेगा.ढील दगा तो घोडा किसी वकत भी उसे पटक सकता है."

(वडोदरानी संस्था अक्षरा अने राजपीपळा कोलेजनां सयुंकत उपक्रमे योजायेल भीष्म साहनी जन्मशताब्दी समारोह माटे तैयार करेल वकतव्यनुं लिखित स्वरुप)

Dr. Hitesh Gandhi
M.Phil., Ph.D. , Supervising Teacher for Ph.D. and Associate Professor Ratansinhji Mahida College, Rajpipla, Gujarat.